मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 5

BHDE–142

स्नातक उपाधि कार्यक्रम (सामान्य)/

बी. ए. (ऑनर्स) हिन्दी

(बी. ए. जी./बी. ए. एच. डी. एच.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2026

बी.एच.डी.ई.-142 : राष्ट्रीय काव्यधारा

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : ***प्रथम*** *प्रश्न अनिवार्य है। कुल* ***पाँच*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

---

1. निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं **तीन** की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : $3 \times 12 = 36$

(क) हाँ, वृद्ध भारतवर्ष ही संसार का सिरमौर है,

ऐसा पुरातन देश कोई विश्व में क्या और है ?

भगवान की भव–भूतियों का यह प्रथम भण्डार है,

विधि ने किया नर–सृष्टि का पहले यहीं विस्तार है।

(ख) चाह नहीं सम्राटों के शव पर

हे हरि, डाला जाऊँ।

चाह नहीं, देवों के सिर पर चढ़ूँ,

भाग्य पर इठलाऊँ॥

मुझे तोड़ लेना वनमाली।

उस पथ पर देना तुम फेंक॥

मातृभूमि पर शीश चढ़ाने।

जिस पथ जावें वीर अनेक॥

(ग) पीकर जिनकी लाल शिखाएँ

उगल रही सौ लपट दिशाएँ,

जिनके सिंहनाद से सहमी

धरती रही अभी तक डोल

कलम, आज उनकी जय बोल।

(घ) कौशल दिखलाया चालों में

उड़ गया भयानक भालों में।

निर्भीक गया वह ढालों में,

सरपट दौड़ा कर वालों में॥

है यहीं रहा, अब यहाँ नहीं,

वह वहीं रहा है वहाँ नहीं।

थी जगह न कोई जहाँ नहीं,

किस अरि-मस्तक पर कहाँ नहीं॥

(ङ) महलों ने दी आग, झोंपड़ी ने ज्वाला सुलगाई थी,

यह स्वतंत्रता की चिनगारी अंतरतम से आई थी,

झाँसी चेती, दिल्ली चेती, लखनऊ लपटें छाई थी,

मेरठ, कानपुर, पटना ने भारी धूम मचाई थी।

2. आधुनिक युग की प्रमुख भारतीय जीवन दृष्टियों का परिचय दीजिए। 16

3. राष्ट्रीयता के विकास में नवजागरण की भूमिका पर प्रकाश डालिए। 16

4. भारतीय भाषाओं में हुई राष्ट्रीय मुक्ति चेतना की सर्जनात्मक अभिव्यक्ति को रेखांकित कीजिए। 16

5. मैथिलीशरण गुप्त की काव्य-भाषा पर विचार कीजिए। 16

6. राष्ट्रीय चेतना के प्रखर कवि के रूप में माखनलाल चतुर्वेदी का मूल्यांकन कीजिए। 16

7. रामधारी सिंह 'दिनकर' की सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना को स्पष्ट कीजिए। 16

8. राष्ट्रीय चेतना के एक अग्रणी कवि के रूप में श्यामनारायण पाण्डेय के महत्व की चर्चा कीजिए। 16

9. 'हमारे पूर्वज' शीर्षक कविता का विवेचन करते हुए उसके महत्व को भी रेखांकित कीजिए। 16

× × × × ×